International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 03(II), July-September, 2026, pp. 50-60

शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओ में छात्रा – अध्यापिकाओ के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन

अर्पिता पंचोली[1*] | डॉ. सुरेखा सोनी[2]

[1]शोधार्थी, कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान।
[2]शोध पर्यवेक्षक, कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: deepaliom2021@gmail.com

Citation: पंचोली, अर्पिता एवं सोनी, सुरेखा (2026). शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओ में छात्रा – अध्यापिकाओ के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(03(II)), 50–60. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.3(II).9355

सार

आधुनिक युग में दोहरी भूमिकाओं (पारिवारिक एवं व्यावसायिकध्शैक्षिक जिम्मेदारियों) के निर्वहन के कारण छात्रा–अध्यापिकाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को आधार बनाया गया है। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए कोटा संभाग के चारों जिलों से कुल 500 छात्रा–अध्यापिकाओं (कोटा से 200, तथा बूंदी, बारां एवं झालावाड़ से प्रत्येक से 100) का यादृच्छिक एवं सोद्देश्य न्यादर्श चयन किया गया। मानसिक स्वास्थ्य के मापन हेतु अरुण कुमार सिंह एवं अल्पा सेन गुप्ता द्वारा रानित मानकीकृत मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण माला का उपयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु माध्य, प्रमाणिक विचलन तथा टी–परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि कोटा और बूंदी तथा बारां और झालावाड़ जिलों की छात्रा–अध्यापिकाओं की मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि कोटा का तुलनात्मक अध्ययन बारां और झालावाड़ के साथ तथा बूंदी का अध्ययन बारां और झालावाड़ के साथ करने पर मानसिक समस्याओं में साथक अंतर पाया गया। यह शोध पत्र महिलाओं के उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के दौरान उनके मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन एवं परामर्श की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

शब्दकोशः *शिक्षण प्रशिक्षण, छात्रा–अध्यापिकाएँ, शैक्षिक समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य, दबाव, तनाव और कुंठा, कोटा संभाग।*

प्रस्तावना

शिक्षा ने स्त्री के महत्व को एक शक्ति के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है. 'नारी तो शक्ति स्वरूप, आत्मा की अमर कला है, इसके बल पर तो सारे जग का व्यवहार चला है।' महात्मा गांधी ने भी नारी शिक्षा के महत्व को इन शब्दों में व्यक्त किया है, 'यदि तुम एक पुरुष को शिक्षित करते हो तो तुम केवल एक को ही शिक्षित करते हो और यदि एक महिला को शिक्षित करते हो तो एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हो।' राधाकृष्णन आयोग के अनुसार, 'स्त्रियों शिक्षित हुए बिना किसी समाज के लोग शिक्षित नहीं हो सकते। यदि सामान्य शिक्षा स्त्रियों या पुरुषों में से किसी एक को देने की विवशता हो, तो यह अवसर स्त्रियों को ही दिया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा निश्चित होने पर वह शिक्षा उनके द्वारा अगली पीढ़ी तक पहुंच जाएगी।' आधुनिक

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

21वीं सदी में महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ रही है। कला, वाणिज्य व विज्ञान वर्ग तीनों ही संकायों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। इस बदलते युग में महिलाओं के जीने का तरीका भी बदला है।

पुरुषों की दिनचर्या में भले ही कोई ज्यादा बदलाव न आया हो, लेकिन महिलाओं की दिनचर्या पूरी तरह बदल चुकी है। ऐसे में कामकाजी महिलाओं को बाहर के काम के साथ–साथ घर का काम भी देखना पड़ता है। रोजगार के हर क्षेत्र में महिलाएँ पुरुषों का वर्चस्व तोड़ रही है। खासकर व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं के काम का दायरा बहुत बढ़ा है, लेकिन कामयाबी के बावजूद परिवार से जो सहयोग उन्हें मिलना चाहिए, वह नहीं मिल रहा है। आज के दौर में महिलाएँ शिक्षा, पत्रकारिता, कानून, चिकित्सा, इंजीनियरिंग व प्रशासकीय के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएँ दे रही है। पुलिस और सेना में भी महिलाएँ अपनी जिम्मेदारी निभा रही है पर ज्यादातर महिलाओं को पेशेवर जिम्मेदारियों के साथ ही घर की जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है यानी बाहर के काम करने के साथ–साथ घर का काम उन्हीं के जिम्मे माना जाता है। इस प्रकार से वह एक तरह से दो नावों पर सवार होती है। इस दोहरी जिदंगी के कारण महिलाएँ कभी–कभी अपने आपको दबाव, तनाव व कुण्ठा ग्रस्त महसूस करती है, जो उनके शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। अतरू इन समस्याओं पर काबू पाना आवश्यक है।

भारतीय समाज पुरुष प्रधान है। इसने नारी को शिक्षित होने की स्वतंत्रता तो दे दी है, लेकिन विचार वही है आज भी महिलाओं से वही अपेक्षाएँ है जो प्राचीन समाज में थी वे इस बात को नजर अदांज कर जाते है कि नारी दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। विवाह होने के बाद लड़की को अपनी पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक जिम्मेदारियों को निभाना आवश्यक हो जाता है।

इस समय नारी संक्रमण काल से गुजर रही है उसका एक पैर घर से बाहर निकला हुआ है, लेकिन दूसरा अभी भी रसोई की चोखट के अन्दर है। भारतीय नारी अपने सहज निर्मल रूप से दया, त्याग, माधुर्य, सेवा और अगाध विश्वास की प्रतिमा मानी जाती है। भारतीय समाज में माता–पिता को अपनी पुत्रियों के हाथ पीले करने की जल्दी होती है। इसके कारण सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, '61 प्रतिशत लड़कियों का विवाह उच्च माध्यमिक शिक्षा या स्नातक की पढ़ाई करते–करते ही हो जाता है। आधुनिक शैक्षिक युग में लड़कियाँ विवाह पश्चात भी उच्च शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर रही है और इस उपभोक्ता युग में एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रही है।'

वर्तमान समय में विद्यालय एवं महाविद्यालय में अनगिनत संख्या में विवाहित व अविवाहित छात्राएँ अध्ययनरत् है। वे अपने मन में उच्च आकांक्षाओं एवं कैरियर के प्रति ललक की अभिलाषा को लेकर निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयास कर रही है। वे दोहरी घर–परिवार तथा अपनी शिक्षा से संबंधित जिम्मेदारियों को निभाते हुए स्वविकास कर रही है । महाविद्यालयों में अध्ययनरत् लाखों युवा विवाहित व अविवाहित छात्राएँ संघर्षरत है। विवाहित व अविवाहित छात्राएँ जो उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् है उनके ऊपर एक ओर अपने परिवार को संभालने की जिम्मेदारी तथा दूसरी ओर अपने कैरियर, स्वयं के पैरों पर खडे होने की अभिलाषा। इन दोहरी स्थिति के कारण वह कभी–कभी अपने आपको दबाव, तनाव व कुण्ठा ग्रस्त महसूस करती है, सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, कार्य की अधिकता, आकांक्षाओं की पूर्ति न होना, योग्यताओं व क्षमताओं का पूरा विकास न होना आदि से संबंधित दबाव, तनाव व कुण्ठा महसूस करती है।

अनुभूत दबाव, तनाव व कुण्ठा को व्यक्ति कुछ सीमा तक प्रयत्न कर प्रतिबन्धित किया जा सकता है। वह स्वतंत्रतापूर्वक या व्यवहारिक रूप से कोई भी कार्य ठीक ढंग से नहीं कर सकता है, अतरू इसके लिए आवश्यक है कि इन दबाव, तनाव व कुण्ठा का प्रबन्धन करे ताकि उस पर प्रतिकूल प्रभाव ज्यादा नहीं पडे।

शोध के उद्देश्य

- कोटा एवं बूंदी जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- कोटा एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कोटा एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बूंदी एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बूंदी एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बारां एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

शोध अध्ययन का परिसीमन

- इस अध्याय में कोटा संभाग की छात्राध्यापिकाओं को लिया गया है।
- यह अध्ययन केवल कोटा संभाग के कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिले तक ही सीमित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

तोमर, जया (2011) ने अधिगम में 'समर्थ एंव असमर्थ बालकों का सामाजिक एंव शैक्षिक तनाव का अध्ययन' नामक शीर्षक से अपना शोध किया है जिसके अध्ययन का उद्देश्य अधिगम में असमर्थ छात्र लिखने, पढ़ने, बोलने, गणितीय क्षमताओं एंव तार्किकता सम्बन्धी असमर्थता के कारण का अध्ययन करना था। जिन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि अधिगम में असमर्थ छात्र, लिखने पढने, इ बोलने गणितीय क्षमताओं एंव तार्किकता सम्बन्धी असमर्थता के कारण का अध्ययन करना था। जिन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि अधिगम में असमर्थ छात्र, लिखने पढ़ने, बोलने गणितीय क्षमताओं एंव तार्किकता सम्बन्धी असमर्थता के कारण अपने शैक्षिक वातावरण में समायोजित नही हो पाते है।

महमूदी अरिन (2012), ने किशोरों के बीच पारिवारिक वातावरण के प्रकार, आत्मसम्मान तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में 9वीं कक्षा के 560 छात्रों का चयन किया । निष्कर्षों में पता चला कि समायोजन के सभी क्षेत्रों में ईरानी तथा भारतीय छात्रों में काफी अन्तर था। हालाकि स्वास्थ्य और भावनात्मक समायोजन के सम्बन्ध में भारतीय छात्रों को अधिक समायोजित पाया गया साथ ही असामजिक तथा घर के मामलों में भी भारतीय छात्रों को अधिक समायोजित पाया गया।

मनोहर लाल (2013) ने 'माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर आवासीय विद्याथियों के शैक्षिक तनाव तथा व्यक्तित्व प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन' किया जिसके अध्ययन का उद्देश्य आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों में आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थीयों के शैक्षिक तनाव तथा व्यक्तित्व प्रमिमानो का तुलनात्मक अध्ययन करना। जिन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि गैर आवासीय विद्यार्थी की तुलना में आवासीय विद्यार्थी शैक्षिक तनाव का अधिक सामना करते है।

नितिका एस. और अन्य (2014) ने, 'उदुपी जिले के चुनिंदा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आत्मबोध और शैक्षणिक दबाव में सह सम्बन्ध का अध्ययन' किया। जिसके अध्ययन के उद्देश्य विद्यार्थियों में शैक्षणिक दवाब के औसत स्तर ज्ञात करना। जिन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि 80.20 प्रतिशत विद्यार्थियों में औसत स्तर का शैक्षणिक दबाव पाया गया। 13.5 प्रतिशत विद्यार्थियों में उच्च स्तर का शैक्षणिक दवाब 6.2 प्रतिशत विद्यार्थियों अति निम्न स्तर का शैक्षणिक दबाव पाया गया।

कुमारावेन, ई. और सेलवराजु, आर. (2015) ने 'विल्लौर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और अध्ययन आदतों का उनके परीक्षा दबाव में सम्बन्ध लिंग आधारित विश्लेषण शीर्षक पर

अध्ययन' किया। जिसके अध्ययन के उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य, अध्ययन आदतों को एवं परीक्षा दुश्चिंता का औसत स्तर का अध्ययनकरना। जिसके अध्ययन के परिणामस्वरूप पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य, अध्ययन आदतों एवं परीक्षा दुश्चिंता का औसत स्तर पाया गया। शोध में पाया गया माता–पिता परीक्षा के दौरान अपने बच्चों के साथ अधिक निर्देशन और परामर्श करते है और अपनी आवश्यकता पर अधिक ध्यान देते है। अध्ययन आदतों एवं स्वास्थ्य मानसिक स्वास्थ्य केइ लिये माता–पिता और अध्यापकों से स्वास्थ्य सम्प्रेषण के मध्य सकारात्मक सह सम्बन्ध देखा गया।

डॉ. बानो अख्तर (2016) ने, 'माध्यमिक स्तर पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक दबाव की स्थिति का अध्ययन।' उद्देश्य – माध्यमिक स्तर पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से विद्यार्थियों के मानसिक दबाव का पता लगाना। निष्कर्ष – शोध के आधार पर पाया कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में 45 प्रतिशत विद्यार्थी मानसिक दबाव का अनुभव करते है चाहे विद्यालय सम्बन्धी दबाव हो, प्राजेक्ट संबंधी दबाव हो या मूल्यांकन संबंधी दबाव हो वह कहीं न कही मानसिक दबाव का अनुभव करता है।

शोध विधि

- **शोध विधि–** प्रत्येक अनुसंधानकर्ता अपने शोधकार्य से सम्बन्धित विधि का चयन किया गया ताकि अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। प्रस्तुत शोध में समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखकर सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।
- **शोध में प्रयुक्त न्यादर्श–** प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा कोटा संभाग का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। कोटा संभाग में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की एक सूची तैयार की गई जिसमें कोटा संभाग के चार जिलों (कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड) के महाविद्यालयों का चयन लॉटरी सिस्टम द्वारा किया गया है। समग्र न्यादर्श के रूप में 80 अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं को लिया गया है। सौउद्देश्य का प्रयोग करते हुए चयनित महाविद्यालय में से कोटा जिले की 50, बूंदी जिले की 10 बारां जिले की 10 एवं झालावाड़ जिले की 10 छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया है।

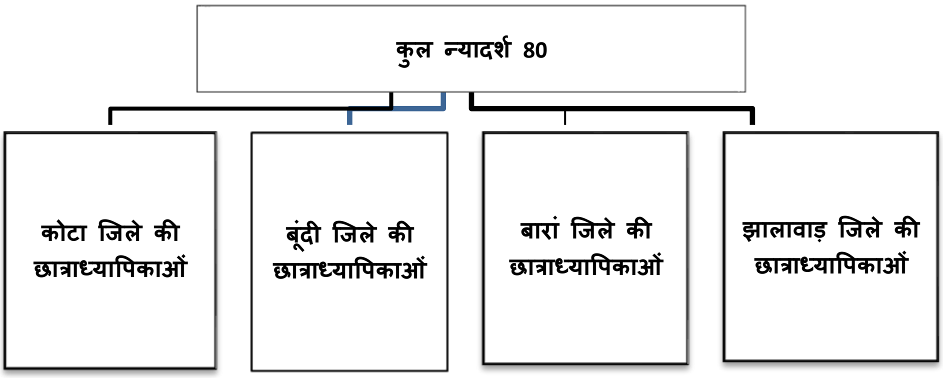

शोध में प्रयुक्त चर

- स्वतंत्र चर – शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राध्यापिकाएँ
- आश्रित चर – मानसिक स्वास्थ्य

शोध में प्रयुक्त उपकरण

- **मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण माला (MHB) –** मानकीकृत उपकरण (अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता)

- **शोधकार्य हेतु विश्लेषण प्रक्रिया** – प्रस्तुत अध्ययन में निम्न सांख्यिकी प्रविधियों का चयन किया जायेगा:
  - मध्यमान
  - मानक विचलन
  - टी– परीक्षण

डाटा प्रस्तुतीकरण, व्याख्या एवं विश्लेषण

परिकल्पना 1 कोटा एवं बूंदी जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 1: कोटा एवं बूंदी जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

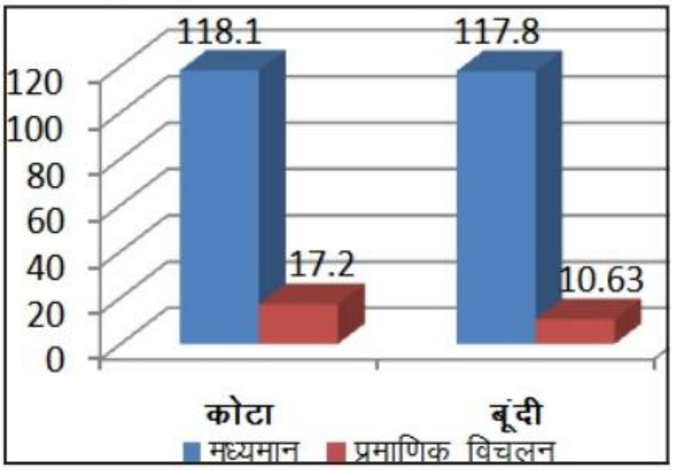

सारणी संख्या 1: कोटा एवं बूंदी जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

पक्ष	क्षेत्र	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी मूल्य-t	सार्थकता 0.05
मानसिक समस्याएँ	कोटा	200	118.10	17.20	0.185	स्वीकृत अर्थपूर्ण
	बूंदी	100	117.8	10.63		

df = N1 + N2 – 2

df = 200 + 100 – 2 = 298

df = 298 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मूल्य= 1.984

व्याख्या एवं विश्लेषण

- कोटा एवं बूंदी जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक मापनी के प्रदत्तों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशरू 118.10 व 117.80 तथा 17.20 व 10.63 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य मापनी प्रदत्तों के प्राप्त मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन से गणना करने पर टी मूल्य 0.185 प्राप्त हुआ है।

मानसिक स्वास्थ्य के प्रदत्तों से प्राप्त टी मूल्य 0.185 स्वतंत्रता की कोटि df = 298 के सार्थकता स्तर 0.05 पर मानक टी मूल्य 1.984 से कम प्राप्त हुआ है। अतरू परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष – परिकल्पना 1 कोटा एवं बूंदी जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को स्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 2 कोटा एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 2: कोटा एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

सारणी संख्या 2: कोटा एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

पक्ष	क्षेत्र	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी मूल्य-t	सार्थकता 0.05
मानसिक समस्याएँ	कोटा	200	118.10	17.20	**7.147**	अस्वीकृत निरर्थक /
	बारां	100	107.40	8.75		

df = N1 + N2 – 2

df =200 + 100 – 2 = 298

df = 298 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मूल्य = 1.984

व्याख्या एवं विश्लेषण

- कोटा एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक मापनी के प्रदत्तों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 118.10 व 107.40 तथा 17.20 व 8.75 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य मापनी प्रदत्तों के प्राप्त मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन से गणना करने पर टी मूल्य 7.147 प्राप्त हुआ है।
- 3.मानसिक स्वास्थ्य के प्रदत्तों से प्राप्त टी मूल्य 7.147 स्वतंत्रता की कोटि df = 298 के सार्थकता स्तर 0. 05 पर मानक टी मूल्य 1.984 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतरू परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष – परिकल्पना 2 कोटा एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है, को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 3 कोटा एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 3: कोटा एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

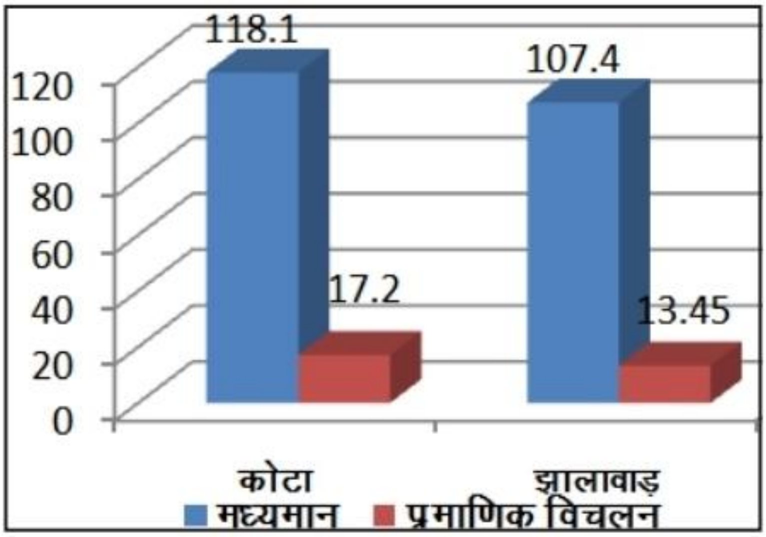

सारणी संख्या 3: कोटा एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

पक्ष	क्षेत्र	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी मूल्य-t	सार्थकता 0.05
मानसिक समस्याएँ	कोटा	200	118.10	17.20	**5.681**	अस्वीकृत निरर्थक /
	झालावाड़	100	107.40	13.45		

df = N1 + N2 − 2

df =200 + 100 −2 = 298

df = 298 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मूल्य = 1.984

व्याख्या एवं विश्लेषण

- कोटा एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक मापनी के प्रदत्तों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशरू 118.10 व 107.40 तथा 17.20 व 13.45 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य मापनी प्रदत्तों के प्राप्त मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन से गणना करने पर टी मूल्य 5.681 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रदत्तों से प्राप्त टी मूल्य 5.681 स्वतंत्रता की कोटि df = 298 के सार्थकता स्तर 0. 05 पर मानक टी मूल्य 1.984 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष – परिकल्पना 3 कोटा एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है, को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 4 बूंदी एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 4: बूंदी एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं परीक्षण क्षेत्र मानसिक समस्याएँ बूंदी के प्रदत्तों का टी मूल्य प्रशिक्षण

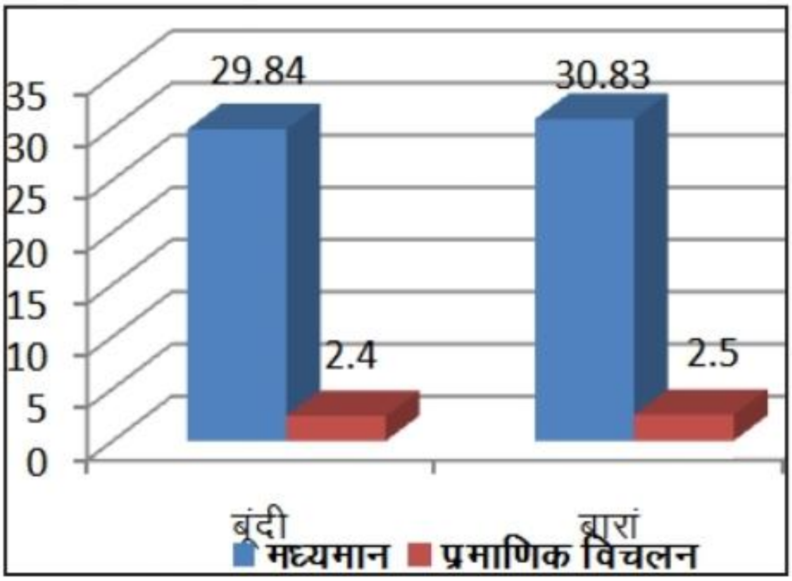

सारणी संख्या 4: बूंदी एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं परीक्षण क्षेत्र मानसिक समस्याएँ बूंदी के प्रदत्तों का टी मूल्य प्रशिक्षण

पक्ष	क्षेत्र	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी मूल्य-t	सार्थकता 0.05
मानसिक समस्याएँ	बूंदी	100	107.40	8.75	0.249	अस्वीकृत / निरर्थक
	बारां	100	107.80	13.45		

df = N1 + N2 − 2

df = 100 + 100 2 = 198

df = 298 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मूल्य = 1.984

व्याख्या एवं विश्लेषण

- बूंदी एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक मापनी के प्रदत्तों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 117.80 व 107.40 तथा 10.63 8.75 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य मापनी प्रदत्तों के प्राप्त मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन से गणना करने पर टी मूल्य 7.558 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रदत्तों से प्राप्त टी मूल्य 7.558 स्वतंत्रता की कोटि df = 298 के सार्थकता स्तर 0.05 पर मानक टी मूल्य 1.984 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतरू परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष – परिकल्पना 4 बूंदी एवं बारां जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है, को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 5 बूंदी एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 5: बूंदी एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

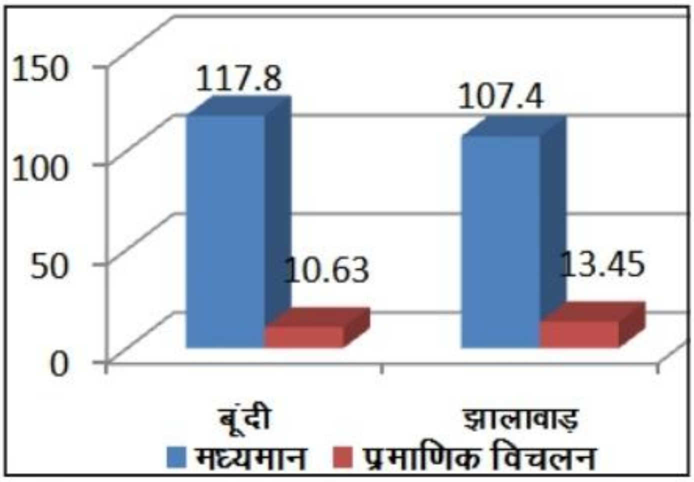

सारणी संख्या 5: बूंदी एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

पक्ष	क्षेत्र	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी मूल्य-t	सार्थकता 0.05
मानसिक समस्याएँ	बूंदी	100	117.80	10.63	5.834	अस्वीकृत / निरर्थक
	झालावाड़	100	107.40	13.45		

df = N1 + N2 − 2

df =100 + 100 − 2 = 198

df = 298 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मूल्य = 1.984

व्याख्या एवं विश्लेषण

- बूंदी एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक मापनी के प्रदत्तों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 117.80 व 107.40 तथा 10.63 व 13.45 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य मापनी प्रदत्तों के प्राप्त मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन से गणना करने पर टी मूल्य 5.834 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रदत्तों से प्राप्त टी मूल्य 5.834 स्वतंत्रता की कोटि df = 298 के सार्थकता स्तर 0.05 पर मानक टी मूल्य 1.984 से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष – परिकल्पना 5 बूंदी एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है, को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 6 बारां एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख संख्या 6: बारां एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

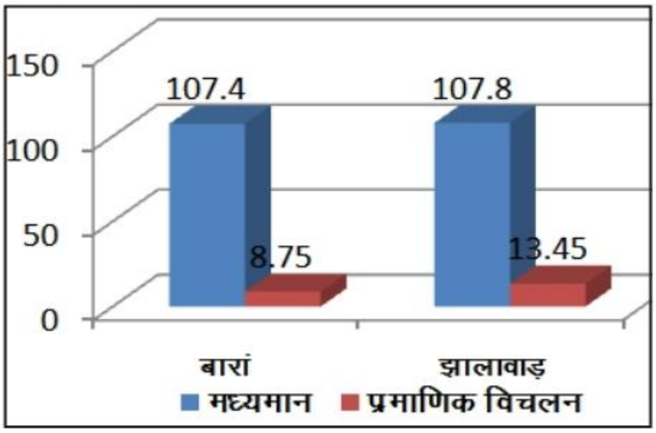

सारणी संख्या 6: बारां एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं के प्रदत्तों का टी मूल्य परीक्षण

पक्ष	क्षेत्र	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी मूल्य-t	सार्थकता 0.05
मानसिक समस्याएँ	बारां	100	107.40	8.75	**0.249**	स्वीकृत अर्थपूर्ण
	झालावाड़	100	107.80	13.45		

df = N1 + N2 – 2

df =100 + 100 – 2 = 198

df = 298 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मूल्य = 1.984

व्याख्या एवं विश्लेषण

- बारां एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक मापनी के प्रदत्तों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 107.40 व 107.80 तथा 8.75 व 13.45 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य मापनी प्रदत्तों के प्राप्त मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन से गणना करने पर टी मूल्य 0.249 प्राप्त हुआ है।
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रदत्तों प्राप्त टी मूल्य 0.249 स्वतंत्रता की कोटि df = 198 के सार्थकता स्तर 0.05 पर मानक टी मूल्य 1.984 से कम प्राप्त हुआ है। अतरू परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष – परिकल्पना 6 बारां एवं झालावाड़ जिलों के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को स्वीकृत किया जाता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि आधुनिक परिवेश में उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्रा–अध्यापिकाओं को एक साथ पारिवारिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक दायित्वों की दोहरी भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप उनके मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकीय विश्लेषण (टी–परीक्षण) के माध्यम से यह तथ्य सामने आया कि कोटा और बूंदी तथा बारां और झालावाड़ जिलों की छात्रा–अध्यापिकाओं की मानसिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि कुछ अन्य जिला–युग्मों की तुलना में सार्थक अंतर पाया गया है। यह विभिन्न भौगोलिक एवं सामाजिक परिवेश की भिन्नताओं को दर्शाता है।

अंततः, यह शोध इस बात पर विशेष बल देता है कि शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित न रहकर, छात्रा–अध्यापिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन, उचित परामर्श सेवाओं और तनाव निवारण सत्रों की सुदृढ़ व्यवस्था की जाए, ताकि वे अपनी दोहरी जिम्मेदारियों के बीच बेहतर शैक्षिक समायोजन स्थापित करते हुए एक कुशल और मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षिका के रूप में विकसित हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अख्तर, बानो (2016). माध्यमिक स्तर पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक दबाव की स्थिति का अध्ययन. शोध पत्रिका, 12(3), 45–52.
2. कुमारवेन, ई., एवं सेलवराजु, आर. (2015). विल्लौर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और अध्ययन आदतों का उनके परीक्षा दबाव में सम्बन्धरू लिंग आधारित विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 8(2), 112–124.
3. तोमर, जया (2011). अधिगम में समर्थ एवं असमर्थ बालकों का सामाजिक एवं शैक्षिक तनाव का अध्ययन. (अप्रकाशित पीएचडी शोध प्रबंध), डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा.
4. महमूदी, अरिन (2012). किशोरों के बीच पारिवारिक वातावरण के प्रकार, आत्मसम्मान तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल स्टडीज, 4(1), 88–95.
5. मनोहर, लाल (2013). माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव तथा व्यक्तित्व प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ एजुकेशनल एडवांस, 5(4), 23–34.
6. नितिका, एस., एवं अन्य (2014). उडुपी जिले के चुनिंदा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आत्मबोध और शैक्षणिक दबाव में सह–सम्बन्ध का अध्ययन. जर्नल ऑफ साउदर्न इंडियन एजुकेशन, 10(1), 67–75.
7. सिंह, अरुण कुमार, एवं सेनगुप्ता, अल्पना (1993). मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण माला (डभ्ठ) मैनुअल. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन, आगर।

❑❑❑